

सवैया और कवित्त

भावार्थ

सवैया की व्याख्या

पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि किंकिनि के धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई।
माथे किरिट बड़े दृग चंचल, मंद हँसी मुखचंद जुन्हाई।
जै जग-मंदिर-दीपक सुंदर, श्रीबज्र दूलह 'देव' सहाई।

शब्दार्थ: पाँयनि = पैरों में, नूपुर = पाजेब, पायल, मंजु = सुंदर, कटि = कमर, किंकिनि = करधनी, कमर में पहनने वाला आभूषण, धुनि = ध्वनि, आवाज़, मधुराई = मीठी, साँवरे = साँवला रंग, लसै = सुशोभित, पट = वस्त्र, पीत = पीला हिये = हृदय या छाती पर, हुलसै = आनंदित होना, बनमाल = वनपूफलों की माला, सुहाई = अच्छी लगती हैं, माथे = सिर पर, किरिट = मुकुट, दृग = नयन, नेत्रा, मुखचंद = मुख रूपी चंद्रमा, जुन्हाई = चाँदनी, जग- मंदिर = जग रूपी मंदिर, सहाई = सहायता करने वाला।

व्याख्या: बाल कृष्ण के मनोहारी रूप का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि उनके पैरों में सुशोभित हो रही पायल रुन-झुन की मधुर आवाश पैदा कर रही है और उनके कमर पर जो करधनी है, वह भी बज रही है। कृष्ण के चलने से नूपुर और करधनी दोनों मधुर ध्वनि उत्पन्न कर रहे हैं। उनके साँवले-सलोने शरीर पर सुंदर पीला वस्त्र उनके रूप को और बढ़ा रहा है। उनकी छाती पर वनफूलों की माला सुशोभित हो रही है। उनके सिर पर मुकुट है। उनकी आँखें बड़ी-बड़ी हैं और चंचल भी हैं। वह कभी इधर देखते हैं तो कभी उधर और उनके मुख पर मंद-मंद मुस्कान है। बाल कृष्ण के मुख को चंद्रमा जैसा सुंदर मानते हुए कवि कहते हैं कि मुख रूपी चंद्रमा से छिटकी उज्ज्वल सुंदर चाँदनी के समान बाल कृष्ण की मुस्कान भी अत्यंत मनमोहक है। इस संसार रूपी मंदिर में वे दीपक के समान हैं, जो समस्त संसार को आलोकित कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि वे तो संपूर्ण ब्रज के दूल्हा हैं और उनकी (कवि देव की) सहायता करने वाले परम हितैषी हैं।

विशेष

1. कविवर देव ने ब्रज भाषा में इसकी रचना की है।
2. कहीं-कहीं तत्सम शब्द भी मिलते हैं, जैसे नूपुर, किरिट, दृग, कटि आदि।
3. कटि किंकिनि, पट पीत, हिये हुलसै में अनुप्रास अलंकार है।
4. मुखचंद, जग-मंदिर-दीपक में रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।
5. इसमें वात्सल्य रस और माधुर्य गुण है।
6. भाषा में गीतात्मकता का गुण है। सवैया छंद है।

कवित्तों की व्याख्या

(1)

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन - झगूला सोहै तन छबि भारी दै।
पवन झूलावै, केकी-कीर बतरावैं 'देव',
कोकिल हलावै-हुलसावै कर तारी दै।।
पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन,
वंफजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।।

शब्दार्थ: डार = डाली, टहनी, द्रुम = वृक्ष, पेड़, पलना = झूला, नव = नूतन, नया, पल्लव = पत्ता, सुमन - झगूला = फूलों का झबला, ढीला-ढाला वस्त्र, सोहै = सुशोभित होता है, तन = शरीर, देह, छबि = सुंदरता, आभा, केकी = मोर, कीर = तोता, झुलावै = झुलाता है, कोकिल = कोयल, बतरावैं = बातें करते हैं, प्रातहि = सुबह- सुबह, प्रातःकाल, जगावत = जगाता है, मदन = कामदेव, महीप = राजा, हलावै = हलावत, बातों की मिठास, हुलसावै = आनंदित करता है, कर तारी दै = ताली बजाकर, पूरित = भरा हुआ, पराग = मकरंद, उतारो करै राई नोन = जिस बच्चे को नशर लगी हो उसके सिर के चारों ओर राई, नमक घुमाकर आग में जलाने का टोटका, वंफजकली = कमल की कली, चटकारी दै = चुटकी बजाकर।

व्याख्या: प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के विभिन्न उपादानों के साथ बसंत का किस प्रकार भावनात्मक संबंध है, इसका सुंदर वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि बसंत रूपी बालक का पलना (झूला) पेड़ों की टहनियाँ हैं और नई-नई कोमल पत्तियों से बना उसका बिछौना बहुत मुलायम एवं आरामदेह है। बसंत रूपी बालक के शरीर पर फूलों से बना झबला सुशोभित हो रहा है। वायु बहने से जब पेड़ की डालियाँ हिलने लगती हैं, तो कवि को ऐसा लगता है कि मानो वायु उसके पालने को झुला रही है। मोर और तोता उससे बातें कर रहे हैं और कोयल मानो अपनी बातों की मिठास से और ताली बजाकर उसे प्रसन्न कर रही है। इस समय चारों ओर फूलों के पराग बिखरे मिलते हैं। उसकी ओर संकेत करते हुए कवि कहते हैं मानो कोई बालक बसंत को नज़र लगने से बचाने के लिए उस पर राई नोन (नमक) उतार रहा है। कमल की कली रूपी नायिका लता रूपी साड़ी को सिर पर ओढ़कर भरे पराग-कणों को बिखेर कर मानो बालक की नज़र उतार रही है। कवि के अनुसार कामदेव जो राजा हैं, उनका पुत्र है यह बसंत और सुबह-सुबह उसे चुटकी बजाकर गुलाब जगाता है। इस प्रकार बसंत ऋतु में प्रकृति में उपलब्ध सारी चीजों का कवि एक-एक कर वर्णन करते हैं।

विशेष

1. प्रस्तुत कवित्त ब्रजभाषा में लिखित है।
2. कवित्त छंद है।
3. कवि ने बसंत को एक शिशु के रूप में देखा है। इसमें मानवीकरण अलंकार है।

4. केकी कीर, हलावै-हुलसावै, पूरित पराग, मदन महीप और बालक बसंत में अनुप्रास अलंकार की निराली छटा है।
5. सुमन - झगूला, कुजकली नायिका, मदन महीप आदि में रूपक अलंकार है।
6. कवि ने प्रकृति के अमूर्त रूप का चित्राण सुंदर मूर्त रूप में किया है।
7. 'पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(2)

फटिक सिलानि सौं सुधार्यौ सुधा मंदिर,
 उदधि दधि को सो अधिकाइ उमगे अमंद।
 बाहर ते भीतर लौं भीति न दिखैए 'देव',
 दूध को सो पेफन फैल्यो आँगन फरसबंद।
 तारा सी तरुनि तामें ठाढ़ी झिलमिली होति,
 मोतिन की जोति मिल्यो मल्लिका को मकरंद।
 आरसी से अंबर में आभा सी उजारी लगै,
 प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद।।

शब्दार्थ : पफटिक = स्पफटिक, सफेद अपारदर्शी रत्न, सूर्यकांत मणि, सिलानि = शिला पर, चट्टान पर, सुधा = अमृत, उदधि = सागर, दधि = दही, उमगे = उमड़ना, अमंद = जो कभी मंद न पड़े, भीति = दीवार, फेन = झाग, फरसबंद = फर्श पर, तामें = उसमें, ठाढ़ी = खड़ी, झिलमिली होति = जगमगाती होती, जोति = ज्योति, आभा, मल्लिका = एक प्रकार का सफेद सुगंधित फूल, मकरंद = फूलों का रस, आरसी = आइना, दर्पण, शीशा, अंबर = आकाश, उजारी = उज्ज्वल, प्रतिबिंब = परछाईं

व्याख्या: कवि ने यहाँ दूधिया चाँदनी से नहाई रात्रि को अमृत-मंदिर के रूप में माना है, जो उज्ज्वल स्फटिक की चट्टान पर बना हुआ है। स्फटिक अत्यंत उज्ज्वल सफेद पारदर्शी कीमती नग होता है। प्रकृति में चारों ओर बिखरी चाँदनी को देखकर कवि को ऐसा लगता है मानो दही का सागर उमड़ता चला आ रहा है। कविवर देव कहते हैं कि इस सुधा-मंदिर की दीवार भीतर-बाहर कहीं से भी दिखाई नहीं पड़ रही है।

और इसके आँगन के फर्श पर मानो दूध का झाग फैला पड़ा है। इस चाँदनी रात्रि रूपी अमृत मंदिर में जो झिलमिलाते तारे दिखाई पड़ रहे हैं मानो वे सब सुंदरी सुसज्जित युवतियाँ खड़ी हैं जिनके आभूषणों की आभा मल्लिका पुष्प के मकरंद से मिली मोती की ज्योति के समान है। संपूर्ण वातावरण इतना उज्ज्वल शुभ्र है कि आकाश मानो स्वच्छ दर्पण है जिसमें राधा का मुखचंद्र प्रतिबिंबित हो रहा है। यहाँ कवि ने चंद्रमा की तुलना राधा के सुंदर मुखड़े से की है।

विशेष

1. प्रस्तुत कवित्त ब्रजभाषा में रचित है, जिसमें तत्सम शब्दों का पुट मिलता है, जैसे - सुधा, उदधि, दधि, प्रतिबिंब आदि।
2. इसमें गेयता का माधुर्य गुण विद्यमान है।
3. अलंकारों की निराली छटा सर्वत्र दिखाई देती है। जैसे अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि।

4. कवि की निराली कल्पना चाँदनी रात की शोभा को दुगुना कर देती है। पाठकों के समक्ष संपूर्ण प्राकृतिक चित्रा सजीव हो उठता है।